Important Topic For

65th BPSC Mains/Written Examination-2020

From The Book BIHAR NAMAN PAPER- I

Topic:

किसान-मजदूर आंदोलन एवं बिहार

पृष्ठभूमि

किसान एवं मजदूरों का आंदोलन बहुत पुराना है। लिपिबद्ध वर्णन के अभाव में इस आंदोलन के विकास की कहानी आज भी इतिहास के गर्भ में छिपा हुआ है। इस प्रकार के आंदोलन का आधुनिक विवरण हमें यूरोप से मिलता है जहाँ के किसान एवं मजदूर जमींदारों, सूदखोरों और सरकारों द्वारा बुरी तरह सताये गए। फलतः वहाँ के किसानों एवं मजदूरों ने अपने ऊपर हो रहे जुल्म के खिलाफ विद्रोह किया। 19वीं सदी के मध्य में यूरोप के शोषितों के मसीहा कहे जाने वाले फेड्रिक एंजेल्स ने The Peasant war in Germany पुस्तक लिखकर उसमें न सिर्फ जर्मनी में होने वाले पंद्रहवीं तथा सोलहवीं सदियों के संधि-काल के किसान-मजदूर विद्रोहों का वर्णन किया वरन् आस्ट्रिया, हंगरी, इटली, तथा अन्यान्य देशों के भी ऐसे विद्रोहों का उल्लेख किया है। इग्लैंड की 14वीं शताब्दी, फ्रांस की 12-13वीं शताब्दी तथा हंगरी की 16वीं शताब्दी के किसान-मजदूर विद्रोहों ने विश्व के अन्य देशों/हिस्सों में रह रहे शोषितों को विद्रोह करने का बल दिया।

वर्ग संघर्ष, सामंतों एवं जमींदारों के जुल्म, भीषण सूदखोरी, असह्य कर-भार तथा गुलामी की जंजीरों ने भारत में भी ऐसी स्थिति उत्पन्न कर दी जिसने भारत में किसान-मजदूर विद्रोह को प्रेरित किया। सदियों से किसानों को एक मूक प्राणी समझता जाता रहा है। उसे वाणी देने का यत्न किसी ने नहीं किया। किसान-मजदूरों को कर्म-भाग्य, भगवान, तकदीर और परलोक के नाम पर हमेशा से चुपचाप कष्ट सहन करने, संतोष करने तथा पशु-जीवन बिताने के उपदेश दिए जाते रहे। ऐसा 17वीं से 19वीं सदी में ज्यादा देखा गया। उन्हें यह भी कहा जाता रहा कि राजा और शासक तो भगवान के अंशावतार है। अतः चुपचाप उनकी आज्ञा शिरोधार्य करने में ही कल्याण है। भारत में पुनर्जागरण के समय इस कल्याण की बूटी ने तो और भी जहर का काम किया।

भारत में किसान संघर्ष एवं आंदोलन का सर्वप्रथम वर्णन सन् 1836 में मालावार में शुरू हुए मोपला किसान विद्रोह का मिलता है। बम्बई प्रेसिडेंसी के महाराष्ट्र, खानदेश और गुजरात में 1845 से 1875 के बीच कई छोटे-बडे कृषक विद्रोह हुए।

Copyright@ BIHAR NAMAN PUBLISHING HOUSE

कोल, कुर्मी, भील, ब्राह्मण और दूसरी जाति के अन्य लोग भी इस तरह के विद्रोह में शामिल हुए। 1871 और 1875 के मध्य खेड़ा (गुजरात), अहमदनगर, पूना, रत्नागिरी, सतारा, शोलापुर और अहमदाबाद (गुजरात) जिलों में भी गुर्जरों, सूदखोड़ों, मारवाड़ियों, दूसरे बनियों के विरूद्ध 'जेहाद' बोले गए जिनका विवरण *'दक्षिणी किसान दंगा-जाँच कमीशन'* की रिपोर्ट में दिया गया है। सन् 1865 में अमेरिका में हुए गृहयुद्ध के कारण भारतीय रूई का मूल्य तेजी से बढ़ने लगे। फलतः किसानो ने काफी कर्ज लिया। 1870 में इस युद्ध के समाप्त होते ही एकाएक मंदी आई (इसका प्रभाव भारत में भी पड़ा) जिससे भारतीय किसान तबाह हो गए। अब भारतीय किसानों की ऐसी स्थिति न रह गई कि वे लिए गए ऋण को चुका सके। फलतः साहूकारों और जमींदारों ने उनकी जमीनों पर जबरन कब्जा करना शुरू किया।

उत्तर भारत के बिहार-झारखण्ड की सम्मिलित सीमा का संथाल विद्रोह, मुंडा विद्रोह आदि भी एक प्रकार का किसान आंदोलन ही था। मिस्ट हंटर ने 'देहाती बंगाल का इतिहास' में बनियों द्वारा संथालों की घी, दूध, वस्त्र, बर्तन औरतो के लोहे के जेवर, अन्नादि लूट का विशद, पर हृदयद्रावक वर्णन किया है। बंगाल में हुए अन्य कृषक आंदोलन की चर्चा भी उनकी पुस्तक में मिलती है। सन् 1917 के चंपारण विद्रोह तथा 1920 ई. में बाबा रामचन्द्र के नेतृत्व में अवध में हुए किसान आंदोलन ने तो भारतीय इतिहास के किसान आंदोलन का स्वरूप ही बदल दिया। नील आंदोलन, पावना विद्रोह, दक्कन विद्रोह, उत्तर प्रदेश में किसान आन्दोलन, कूका विद्रोह, रामोसी विद्रोह, रंपाओं का विद्रोह, तेभागा आंदोलन, तेलंगाना आंदोलन, बिजोलिया किसान आंदोलन आदि भारत में हुए प्रमुख किसान-मजदूर आन्दोलन की गाथा सुनाते है।

बिहार में किसान और मजदूर आन्दोलन

गंगा के चौरस तथा उपजाऊ मैदानो में गहन खेती के कारण यहाँ किसानों की संख्या भारत के अन्य प्रान्तों की तुलना में शुरू से अधिक रही है। फलतः उनका शोषण और उत्पीड़न भी अधिक हुआ। बिहार में अंग्रेजी सत्ता की गतिविधियों एवं उनकी साम्राज्यवादी शोषणकारी नीति तथा जमींन्दारों के आर्थिक शोषण पद्धति ने यहाँ के किसानों पर दोहरा प्रहार किया। परिणामतः यहाँ के किसानों ने इस सबके विरोध में अपनी आवाज बुलन्द की। बिहार के किसानों का पहला विद्रोह 1866-67 का पंडौल (मधुबनी जिला) का विद्रोह था। 1883-84 में मिथिलांचल के किसानों ने दरभंगा महाराज के खिलाफ विद्रोह किया। इसके बाद विद्रोहों का ताँता ही लग गया। 1917 ई.में महात्मा गाँधी ने चम्पारण में निलहों के विरूद्ध रैयतों को नेतृत्व प्रदान किया और सत्याग्रह को मुक्ति दिलवाई। चम्पारण की सफलता से उत्साहित होकर स्वामी विद्यानन्द ने मधुबनी में आंदोलन शुरू किया जो शीघ्र ही सम्पूर्ण उत्तरी बिहार में फैल गया। अब बिहार में बहुमुखी शक्तियाँ भूखी जनता को भूखमरी से बचाने के लिए किसान आन्दोलन की उत्पत्ति के लिए सक्रिय हो उठी।

शाह मोहम्मद जुबैर और श्रीकृष्ण सिंह ने 1922-23 में मुंगेर में किसान सभा की स्थापना की जिसका प्रमुख उद्देश्य बिहार में किसानों को संगठित कर उनकी समस्याओं का निदान करना था। शाह मोहम्मद जुबैर को किसान सभा का अध्यक्ष, श्रीकृष्ण सिंह को उपाध्यक्ष तथा सिद्धेश्वर चौधरी और नन्दकुमार सिंह को सचिव बनाया गया। 4 मार्च 1928 ई. को पटना जिला के बिहटा मे स्वामी सहजानन्द सरस्वती ने किसान सभा की औपचारिक स्थापना कर किसान आन्दोलन को एक नयी दिशा दी। उत्तर प्रदेश में जन्में स्वामी सहजानंद सरस्वती बिहार के किसान आन्दोलन के मूल अनुप्रेरक बन गये और मरते दम तक किसानों की समस्याओं का निराकरण करना उनके जीवन का मूल लक्षण बना रहा। 1929 ई.में सोनपुर मेले में ही एक सभा आयोजित करके 'बिहार प्रान्तीय किसान सभा' की स्थापना की गई जिसमें स्वामी सहजानन्द सरस्वती को अध्यक्ष तथा श्री कृष्ण सिंह को सचिव बनाया गया। यमुना कार्जी, गुरू लाल सहाय और कैलाश लाल को प्रमण्डलीय सचिव बनाया गया। इस सभा की गतिविधियाँ काफी बड़े पैमाने पर शुरू हुई। इसी वर्ष (1929 ई.) सरदार बल्लभ भाई पटेल ने बिहार की यात्रा की। उनकी यात्रा से किसान आन्दोलन को बल मिला ही, बिहार किसानों में राष्ट्रीय चेतना का भी विकास हुआ।

1929 की विश्वव्यापी मंदी से कृषि उत्पादों के मूल्य में काफी गिरावट आयी। इससे किसानों की आय शून्यता की ओर बढ़ने लगी और वे जमींदारों का लगान चुकाने में असमर्थ हो गये। गिरते हुए मूल्यों के संघात से पीड़ित होकर किसान फटेहाल होने लगे और उनके अस्तित्व का प्रश्न आ खड़ा हुआ। अपने अस्तित्व की रक्षा के लिए बिहार के किसानों ने आंदोलन का रास्ता अपना लिया। बिहार में जगह-जगह अनेक सभाओं का आयोजन किया जाने लगा। इन सभाओं में किसानों की शिकायतें सुनी जाती और उन्हें दूर करने के उपायों पर विचार-विमर्श किया जाता। किसानों के आक्रोश और उनकी सक्रियता ने जमींदारों तथा साहूकारों को संशकित कर दिया। दिनो-दिन बढ़ रहे किसान आन्दोलन की लोकप्रियता पर अंकुश लगाने की उद्देश्य से जमींदारों ने दरभंगा महाराज की अध्यक्षता में United Political Party की स्थापना की। किसान आन्दोलन को कमजोर करने

BIHAR NAMAN PUBLISHING HOUSE
By Santosh Kashyap
Copyright@ BIHAR NAMAN PUBLISHING HOUSE

के उद्देश्य से गठित इस पार्टी के सचिव शिवशंकर झा थे।

30-31 मई 1931 को जहानाबाद में एक राजनीतिक सम्मेलन के आयोजन किए जाने के तुरन्त बाद वहाँ किसानों की एक सभा बुलाई गयी। इस सभा में जमींदारों के अत्याचारों से सम्बन्धित प्रस्ताव पारित किये गये। इसी सभा में दानाबन्दी व्यवस्था की जाँच पड़ताल के लिये एक समिति गठित करने का भी प्रस्ताव पारित हुआ। धीरे-धीरे गया, पटना, सीवान, मुजफ्फरपुर, चम्पारण, शाहाबाद, मधुबनी, और कुछ अन्य जिलों के अलग-अलग स्थानों पर अधिक संगठित और सक्रिय रूप में किसान सभायें आयोजित की जाने लगी। इन सभाओं में जमीन्दारों के उत्पीड़न के विरूद्ध आवाज उठाने के अलावे नहर शुल्क में कमी करने, मालगुजारी वसूली बन्द करने या उसे कम करने तथा इसकी पक्की रसीद देने आदि की माँग की गयी। अगस्त 1932 ई. में डा. युगल किशोर सिंह द्वारा रैयतों के बीच एक हस्ताक्षरित इश्तेहार वितरित किया गया। इस इश्तेहार में जमींदारों द्वारा किसानों के प्रति किए जा रहे अत्याचारों एवं अनुचित व्यवहार की ओर ध्यान आकृष्ट किया गया था। सन् 1933 में स्वामी सहजानंद सरस्वती ने बिहार प्रान्तीय किसान सभा का पुनर्गठन किया। पुनर्गठित प्रान्तीय किसान सभा की कार्यकारिणी ने किसानों की दुर्दशा की जाँच के लिए 18 जून 1933 ई. को एक जाँच समिति का गठन किया। स्वामी सहजानंद यमुना कार्जी, यदुनन्दन शर्मा और डॉ युगल किशोर सिंह इसके सदस्य थे। इस जाँच कमिटी द्वारा तैयार की गई रिपोर्ट ने ब्रिटिश सरकार का किसानों की दयनीय आर्थिक स्थिति की ओर ध्यान आकृष्ट करने का प्रयास किया गया।

बिहार के प्रबुद्ध नेताओं को यह समझते देर न लगी कि कांग्रेस किसानों के प्रति उदासीन रवैया अपना रहा है। इसी से क्षुब्द होकर बिहार के जयप्रकाश नारायण और नरेन्द्र देव ने कांग्रेस के अन्दर ही कांग्रेस समाजवादी पार्टी का गठन किया। इस समूह ने स्वामी सहजानंद सरस्वती द्वारा बिहार में चलाये जा रहे किसान आन्दोलन का हार्दिक स्वागत किया तथा उसका समर्थन किया। बिहार के प्रमुख समाजवादी नेताओं रामनन्दन मिश्र, अवधेश्वर प्रसाद सिन्हा, रामवृक्ष बेनीपुरी, गंगाशरण सिंह, अब्दुल बारी ने किसान सभा के माध्यम से काम करना शुरू किया। धीरे-धीरे समूचे बिहार में किसान सभा का प्रभाव बढ़ने लगा। केवल दो वर्षों में ही सन् 1936 में 'कांग्रेस समाजवादी पार्टी' की सदस्यता 2,50,000 तक पहुँच गयी। इसी वर्ष लखनऊ में अखिल भारतीय किसान सभा गठित हुई। सहजानंद इसके अध्यक्ष और प्रो. एन. जी. रंगा को सचिव बनाया गया। उन्होंनें किसान की माँगों को कांग्रेस के कार्यक्रमों का अंग बनाने की माँग की। कांग्रेस के समाजवादी विचारधारा से प्रभावित सदस्यों के दबाब में बिहार प्रान्तीय कांग्रेस कमिटी ने रैयतों की शिकायतों की जाँच के लिए राजेन्द्र प्रसाद की अध्यक्षता में किसान जाँच समिति का गठन किया। इस जाँच समिति ने जून-जुलाई 1936 में गया, पटना, शाहाबाद, छोटानागपुर, भागलपुर और तिरहुत के विभिन्न जगहों में घुम-घुमकर अपना काम पूरा किया।

1937 में संपन्न हुए चुनाव में बिहार की जनता ने कांग्रेस को भरपूर समर्थन दिया और उसने श्रीकृष्ण सिंह के नेतृत्व में बिहार में कांग्रेसी मंत्रिमण्डल की सरकार बनाई। अब्दुल बारी और रामवृक्ष बेनीपुरी ने कांग्रेस की नयी सरकार के सामने जमीन्दारी उन्मूलन का प्रस्ताव रखा। इस प्रस्ताव को अमलीजामा पहनाने के लिए कांग्रेस मंत्रिमण्डल ने 1937 में ही बकाश्त भूमि पुनर्वास कानून और बिहार काश्तकारी कानून पारित कर दिया। परन्तु ये दोनों कानून किसान सभा के नेता को संतुष्ट न कर सका। किसान नेताओं ने जगह-जगह सभायें आयोजित कर चुनावी वादा पूरा न किये जाने को लेकर कांग्रेस मंत्रिमण्डल की आलोचना की। 1 सितम्बर 1937 को पूरे प्रान्त में किसान दिवस मनाया गया। धीरे-धीरे किसान सभा और कांग्रेस के मध्य पुराना सौहार्द्र समाप्त होता चला गया। 4 दिसम्बर 1937 को कांग्रेस ने प्रान्तीय सभा बुलाई जिसमें अपने सदस्यों का किसान सभा की गतिविधियों से अलग रहने का निर्देश दिया गया। इससे कांग्रेस और किसान सभा के बीच दूरी और भी बढ़ गई। 8 अगसत 1938 को बिहार के सभी जिला मुख्यालयों में किसानों ने प्रदर्शन किया। बिहार में किसानों के अग्रणी नेता स्वामी सहजानन्द सरस्वती ने बड़ी संख्या में किसानों को साथ लेकर बिहार विधान सभा का घेराव किया और प्रधानमंत्री श्रीकृष्ण सिंह एवं कांग्रेस अध्यक्ष राजेन्द्र प्रसाद के विरूद्ध नारेबाजी की।

बिहार प्रान्तीय किसान सभा ने अपनी कार्यवाही तेज करते हुए दिसम्बर 1938 के ओइनों सम्मेलन में बकाश्त भूमि के मुद्दे को लेकर सत्याग्रह अभियान चलाने का निर्णय लिया। यदुनन्दन शर्मा ने 22 दिसम्बर 1938 को नेउरा के विवादस्पद खेत की फसल काटकर सत्याग्रह की शुरूआत कर दी। कार्यानन्द शर्मा के नेतृत्व में बड़हिया टाल (मुंगेर) में शोषित और पीड़ित किसानों द्वारा जमीन्दारों से बकाश्त भूमि के रूप में परिवर्तित अपनी रैयत भूमि वापस लेने का आन्दोलन जोर-शोर से शुरू कर दिया। आन्दोलन की लपटे इतनी तेज उठने लगी कि भयभीत कांग्रेस ने श्रीकृष्ण सिंह और राजेन्द्र प्रसाद (दोनों कांग्रेस सदस्य थे) को किसानों से मिलकर उनसे आन्दोलन वापस लेने का आग्रह करने को कहा। परंतु किसान टस से मस नहीं हुए।

Copyright@ BIHAR NAMAN PUBLISHING HOUSE

From The Book BIHAR NAMAN PAPER-I

दरभंगा जिले के पादरी, राघोपुर, देबुल और पंडौल में रामनन्दन मिश्र के नेतृत्व में किसान आन्दोलन भड़क उठा। जमुना कार्यी ने सारण के किसानो का नेतृत्व किया। फरवरी 1939 ई. में राहुल सांस्कृत्यायान ने अन्नबारी में सत्याग्रह शुरू किया। उन्होंने जबर्दस्ती बुआई और फसल कटाई का नारा बुलन्द किया। जमीन्दारों ने आंतक का सहारा लेकर आन्दोलन को दबाने का प्रयास किया। पुलिस ने आन्दोलन को नेतृत्व प्रदान करनेवालों के साथ बड़ी संख्या में उनके समर्थकों को भी गिरफ्तार कर लिया। पर संघर्ष के दौरान किसानों ने बड़ी दिलेरी के साथ पुलिस और जमीन्दार के लठैतों का मुकाबला किया। 1930 के अन्त में प्रान्तीय सरकार के त्यागपत्र और खाद्यान्न मूल्यों में 20% की वृद्धि के पश्चात् बकाश्त आन्दोलन की गति मन्द पड़ने लगी।

19 अप्रैल 1940 को स्वामी सहजानन्द सरस्वती को पटना जिला में दिये गये तीन भाषणों के युद्ध संदर्भ में हानिकारक होने के आरोप में गिरफ्तार कर लिया गया। उनकी गिरफ्तारी के बाद प्रान्तीय किसान आन्दोलन का नेतृत्व कार्यानन्द शर्मा के हाथों में आ गया। कार्यानन्द शर्मा साम्यवादी दल के सदस्य थे। उनके नेतृत्व में किसान आन्दोलन का काम पटना, मुजफ्फरपुर, दरभंगा, सारण चम्पारण, पूर्णिया, पलामू और संथाल परगना जिलों में चलता रहा। 1 सितम्बर 1940 को प्रान्त के कई स्थानों पर किसान दिवस मनाया गया। 8-9 मार्च 1941 को डुमराँव में आयोजित बिहार प्रान्तीय किसान सभा के सम्मेलनल में कांग्रेस समाजवादियों ने किसान संगठन पर नियंत्रण स्थापित करने का प्रयास किया। पर उन्हें सफलता नहीं मिली। समाजवादियों ने अलग संगठन बना लिया और रामवृक्ष बेनीपुरी को उसका अध्यक्ष नियुक्त किया। रामवृक्ष बेनीपुरी की गिरफ्तारी के बाद किसानों पर से समाजवादियों के प्रभाव में कमी होने लगी और किसान आन्दोलन पर साम्यवादी प्रभाव में वृद्धि हुई। अगस्त 1941 में यमुना कार्जी की अध्यक्षता में आयोजित प्रान्तीय किसान सभा की कार्यसमिति ने सभी युद्ध विरोधी कार्यवाहियों को बन्द करने का निर्णय लिया। 9 मार्च 1942 को हजारीबाग जेल से रिहा होने के बाद स्वामी सहजानन्द सरस्वती ने भी सरकार को समर्थन देने की नीति का पूर्ण समर्थन किया। स्वामी तथा उनकी किसान सभा ने 1942 के महान जन आन्दोलन से अपने आपको दूर रखा और ब्रिटिश साम्राज्यवादियों के युद्ध प्रयास के सहयोगी बन गये। जयप्रकाश नारायण भारत छोड़ो आन्दोलन के जननायक बनकर उभरे। उनके नेतृत्व में समाजवादी विचारधारा से प्रभावित किसानों ने 1942 के ब्रिटिश साम्राज्यवाद, विरोधी आन्दोलन को एक यादगार आन्दोलन के रूप में बदल दिया और देश को आजादी की दहलीज पर लाकर खड़ा कर दिय। ब्रिटिश सत्ता को यह अहसास हो गया कि भारत के गाँव-गाँव में जन आन्दोलन फैल चुका है और अब उसका दमन करना उनके बूते के बाहर है। इस प्रकार 1930 के पश्चात् बिहार में अनेक किसान आन्दोलनों का जन्म हुआ। जिसका भारत के स्वाधीनता संग्राम में महत्त्वपूर्ण योगदान है।

भारत में प्रथम विश्वयुद्ध के बाद वर्ग चेतना के आधार पर मजदूरों ने संगठित होना शुरू किया। इन्हें इसकी प्रेरणा 1917 की रूस की बोल्शेविक क्रान्ति और साम्यवाद के प्रसार से मिली थी। 1920 ई. में भारतीय राष्ट्रीय संघ गठित हुआ। बिहार भी इससे पीछे नहीं रहा। 1920 ई. में ही बिहार के जमशेदपुर में एस. एन. हल्दर और व्योमकेश बनर्जी ने जमदेशपुर वर्क्स एसोसिएशन का गठन किया। इसी वर्ष टाटा आयरन एण्ड स्टील वर्क्स के लगभग 40 हजार मजदूरों ने हड़ताल कर दी। 1922 ई. में पुनः यहाँ हड़ताल हुई। कम्पनी के अधिकारियों ने कठोर कदम उठाते हुए अच्छी संख्या में मजदूरों की छँटनी कर दी। 1925 ई. में एक बार फिर जमशेदपुर की टाटा कम्पनी के मजदूर हड़ताल पर चले गये। इस बार महात्मा गांधी की मध्यस्थता से मजदूरों की हड़ताल समाप्त हुई। महात्मा गांधी के कहने पर जे. आर. डी. टाटा ने मजदूरों को कुछ रियायतें भी प्रदान की। 1928 ई. में जमशेदपुर में उस समय तक की देश की सबसे बड़ी हड़ताल हुई। माणिक होमी के नेतृत्व में यह हड़ताल साढ़े तीन महीने तक चली। सी. एफ. एण्ड्रयूज, एन. एम. जोशी और जमनादास मेहता ने समझौता कराने का प्रयास किया, पर उन्हें सफलता नहीं मिल सकी। अन्त में 18 अगस्त 1928 को सुभाष चन्द्र बोस ने जमशेदपुर आकर कम्पनी प्रबन्धन से बातचीत शुरू की। उनके सद्प्रयासों में 13 सितम्बर को हड़ताल समाप्त हो गयी। इसी हड़ताल के बाद माणिक होमी ने जमशेदपुर लेबर फेडरेशन की स्थापना की जिसे कम्पनी द्वारा मान्यता प्रदान की गयी।

1934 में कांग्रेस के अन्दर कांग्रेस समाजवादी पार्टी की स्थापना हुई। इस पार्टी के प्रमुख नेताओं विशेषकर जयप्रकाश नारायण और अब्दुल बारी ने मजदूरो की समस्याओं की ओर विशेष ध्यान दिया। समाजवादी पार्टी के अन्य सदस्य यथा बसाबन सिंह, सत्यनारायण सिंह, किशोरी शरण सिंह, योगेन्द्र शुक्ल, रियासत हुसैन आदि ने मजदूरों के हित के लिए काम करना शुरू किया। 8 दिसम्बर 1938 को पटना जेल में रिहा होने के बाद सुप्रसिद्ध क्रान्तिकारी बटुकेश्वर दत्त ने श्रमिक संघ आन्दोलन में भाग लेने का निश्चय किया। इस उद्देश्य से वे जमशेदपुर गये और मजदूरों से राष्ट्रीय स्वाधीनता आन्दोलन में भाग लेने का आह्वान किया। इन समाजवादी विचारधारा से ओत-प्रोत कांग्रेसियों ने श्रमिकों के असंतोष को प्रकट करने के लिए प्रोत्साहित

By Santosh Kashyap
BIHAR NAMAN PUBLISHING HOUSE
Copyright@ BIHAR NAMAN PUBLISHING HOUSE

किया। इन नेताओं ने विभिन्न श्रमिक संगठन स्थापित किये जिनमें अब्दुल बारी का टाटा वर्कस यूनियन और रियासत हुसैन एवं मेजर रायविश का डिहरी श्रमिक संघ प्रमुख हैं। 1937-38 के दौरान पूरे बिहार में 11 श्रमिक हड़तालें हुई। 1938-39 में इनकी संख्या में वृद्धि हो गयी। इस दौरान मुख्य रूप से रोहतास उद्योग डालमियानगर, गया काटन मिल, जपला सीमेन्ट वर्क्स, इण्डियन कम्पनी, टिन प्लेट कम्पनी ऑफ इण्डिया जमशेदपुर, बिहटा चीनी मिल और पटना के विभिन्न औद्योगिक केन्द्रों में हड़तालें हुई। इन सभी हड़तालों में किसी न किसी समाजवादी नेता की सक्रिय भागेदारी थी। जयप्रकाश नारायण भी यदा-कदा इन क्षेत्रों में जाया करते थे। 18 फरवरी 1940 को जयप्रकाश नारायण ने जमशेदपुर में मजदूरों की समस्या पर भाषण दिया था। इसी भाषण के लिए उन्हें 1940 ई. में भारतीय रक्षा कानून के अन्तर्गत गिरफ्तार किया गया था और 9 महीने की कड़ी कैद की सजा दी गयी थी।

1942 की अगस्त क्रान्ति में भी बिहार के मजदूरों ने अपना योगदान दिया। इस जनआन्दोलन के दौरान झरिया और कतरास में हड़ताल हुई। 9 अगस्त 1942 को जमशेदपुर में एक सभा का आयोजन किया गया जिसमें हजारों मजदूर सम्मिलित हुए। इस सभा में अगले दिन हड़ताल रखने का आह्वान किया गया। इस आह्वान पर 10 और 11 अगस्त को अनेक मजदूर काम पर नहीं गये। रोहतास उद्योग के मजदूरों ने 9 अगस्त 1942 को डालमियानगर में एक जुलूस निकाला। यही जुलूस शाम में एक सभा में बदल गया। रोहतास उद्योग के श्रम अधीक्षक परमहंस ने 10 अगस्त को कर्मकारों से कारखाना बन्द कर देने की अपील की। कटिहार में घनघोर बारिश के बीच लगभग 10 हजार मजदूरों की भीड़ ने रजिस्ट्री आफिस को लूट लिया।

बिहार के मजदूरों ने अधिकांशतया अपनी तत्कालीन माँगों को स्वीकार कराने के उद्देश्य से हड़ताल किया था। उनके आन्दोलनों से बिहार के राजनीतिक रंगमंच पर कई मजदूर नेताओं का अभ्युदय हुआ। कुछ राष्ट्रवादी नेताओं यथा सुभाष चन्द्र बोस, जयप्रकाश नारायण, अब्दुल बारी आदि ने भी बिहार के मजदूरों का नेतृत्व किया था। सीमित प्रभाव वाले बिहार के मजदूर आन्दोलन ने भारत की आजादी की लड़ाई में भी अपना थोड़ा-बहुत योगदान दिया था।

From The Book BIHAR NAMAN PAPER-I

We are providing-
- **free** ONLINE Test Series For 66th BPSC Preliminary Examination-2020
- Regular Standard Study Material for BPSC/BPSSC/BSSC

You can join us:
What's app No.- 9355167891 Facebook:- BIHAR NAMAN
Telegram Link:- http:t.me/biharnaman
Email Id:- biharnaman@gmail.com

BIHAR NAMAN PUBLISHING HOUSE
(Approved By: Govt. Of India)
NEW DELHI- 110084
Mob:- 8368040065
Email- biharnaman@gmail.com

Copyright@ BIHAR NAMAN PUBLISHING HOUSE